STUDENT MEDIA BODY OF IIT KHARAGPUR

आवाज़

MAR 2023

CDC Internship Drive 2022-23

Internship is an important step in a student's professional life, providing them with invaluable experience in the real-world industry, allowing them to test their skills in real-world problems, and exploring their field of interest. The CDC internship process for 2022-23 has been successfully completed, with a total of 499 offers for various programs. The B.Tech, Dual Degree, and Int. M.Sc. programs received 215, 211, and 63 offers, respectively. Following the tradition, maximum offers (116) were bagged by the CS students, followed by ECE (90) and EE (42). The maximum number of students (197) were recruited in the IT/software domain, followed by Core Engineering (80) and Investment Banking (47). Well known firms such as BCG, Bain, Google, Rubrick, and others participated in the process. Honeywell (31), Amazon (29), and Sprinklr (25) were the top recruiters. However, it should be remembered that while the CDC internship is undoubtedly an important part in one's career, it is not the be-all and end-all. There are ample numbers of opportunities, one tries to seek them out.

For complete analysis visit awaaziitkgp.com

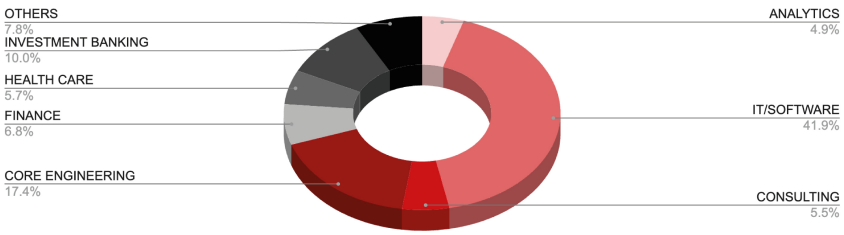

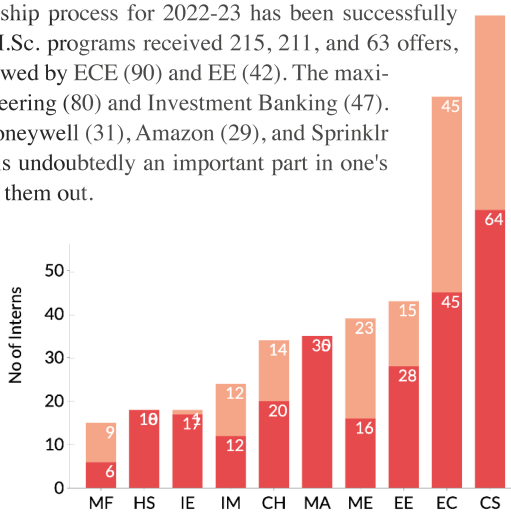

DepC Analysis 2021-22

Department change remains a hot topic among freshers as soon as they begin a new chapter, their college life. Everyone's rushing and burning the midnight oil to achieve the department of their choice. The department/branch of an individual changes based on the CGPA they obtain during their first year, the cutoff being 8.5, in which some of the courses are not accounted for. In the academic session 2021-22, a total of 208 (top 11%) students were successful in changing their departments, with 150 choosing B.Tech/B.S. courses and 58 opting for dual degree courses. The number of applicants and their CGPA is the basis for the cut-off in each department, with the highest cut-off being 10 in CS. The highest number of students (31) were able to change their departments to ME.

Hence, all DepC applicants may consider exploring department change options while remembering that no department is superior or inferior to another. Don't be discouraged even if the outcome is not what you hoped for but keep working towards the goal you want to achieve in your life. Don't forget that it's the journey that teaches us what we truly need in life and what will truly make us happy.

For complete analysis visit awaaziitkgp.com

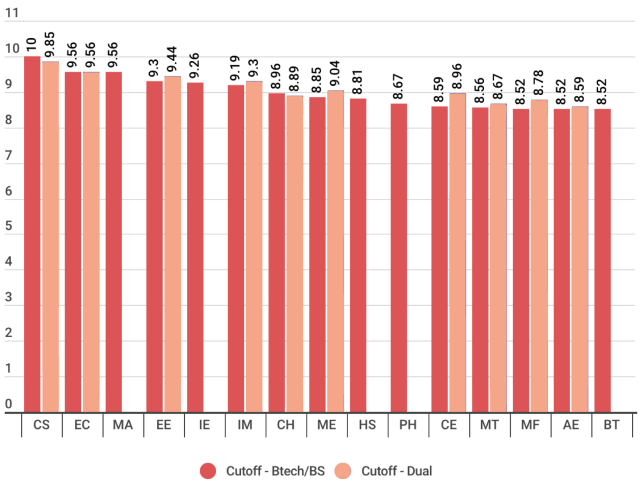

पंजी DUDE

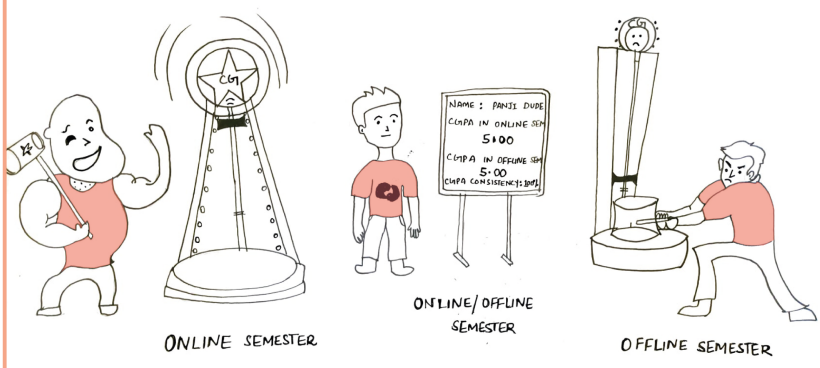

PLACEMENT
ANALYSIS 2022-23

Getting a placement is a major milestone in the lives of many students. Sometimes, it is the major reason students aspire to get into an IIT. After two years, the Placement drive was conducted in a hybrid mode.

In its first phase, a total of 1650+ offers (including PPOs) were received from 290+ companies. It is commendable that more than 1000 offers were made in just two days. ECE students received the highest number of offers (190), followed by CS (177) and ME (162) students. Students pursuing a dual degree received the highest number of offers (409) followed by BTech (381) and MTech (333).

The majority of students were recruited in the IT Sector, followed by Core and Finance as the biggest recruiters.

76.46% of registered undergraduate students were offered jobs.

.

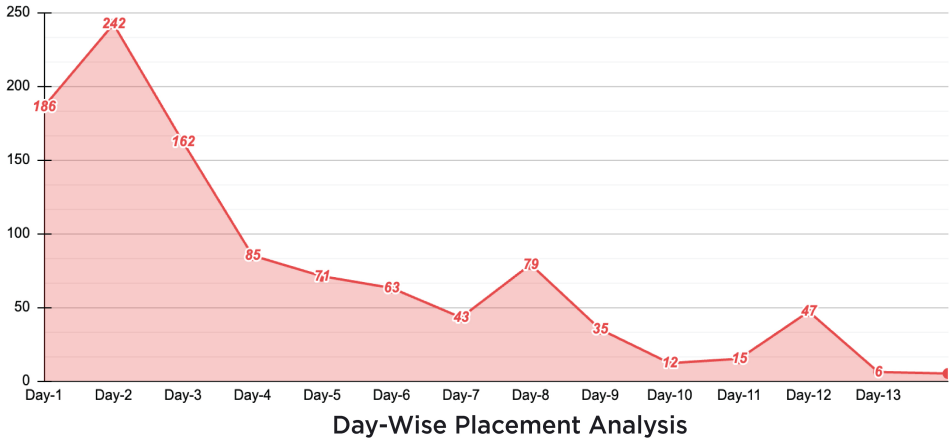

Day-Wise Placement Analysis

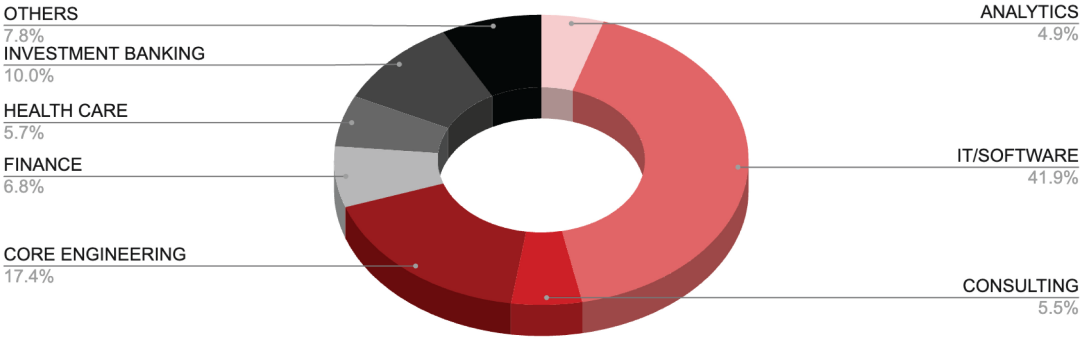

Sector Wise Analysis

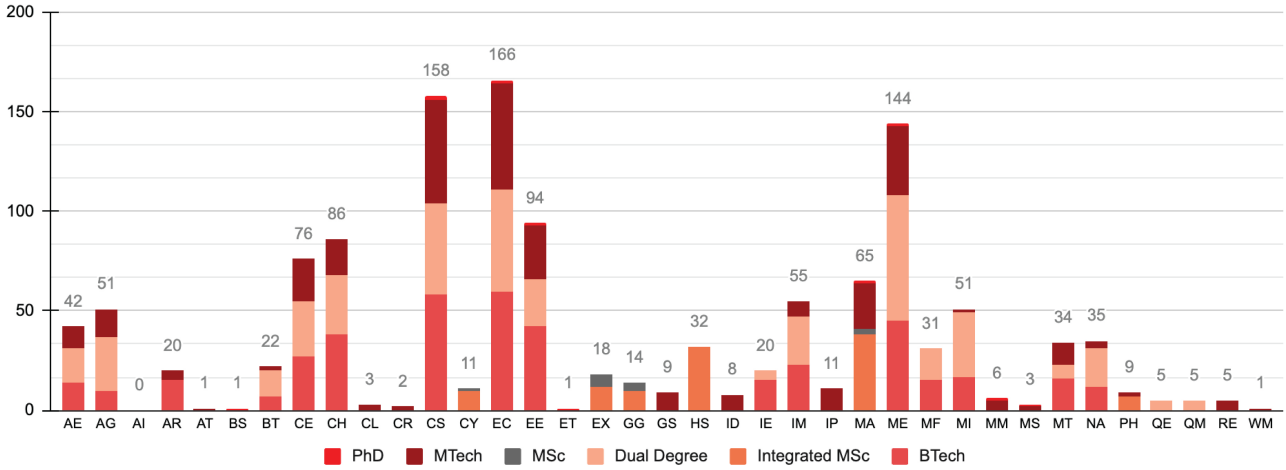

Dreamland AC Multicuisine Restaurant

IIT Campus, Kharagpur - 2

Contact No: 9434721001
WhatsApp: 9382644998

A.C. HALL BOOKING FOR ANY TYPE OF PARTY, ROOM DELIVERY SERVICE OF FOOD AVAILABLE.

(Offer Valid till 30th June 2023)

SPECIAL
10% OFF

एक केजीपियन के जीवन में सामान्य दिन

"बेटा दो साल की बात है, दृढ़ संकल्प से पढ़ाई करो फिर आईआईटी पहुंचकर लाइफ सेट है|"

इस प्रलोभन का शिकार आईआईटी में दखिला लेने वाला हर एक बच्चा हुआ होगा| क्या प्रथम वर्ष और क्या अंतिम, आईआईटी में प्रवेश के बाद "दूर के ढोल सुहावने" वाली स्थिति उत्पन्न हो गई थी | ऐसे ही एक मेरी जीवनी है जो मैं अपने पाठकों के साथ सांझा करने के लिए काफी पल से इंतजार कर रहा था |

पुरी रात "सोसायटी फ्रेंड्स" के साथ "नाइटआउट" करने के बाद, अचानक से सुबह 8 बजे होने वाली "बीईएम" टेस्ट का सांप सूंघ गया| समय की मांग कहे या स्थिति की गंभीरता, मैंने ब्रह्म मुहूर्त में "बीईएम टेस्ट" की पढाई का शुभारंभ किया| "एनपीटेल" से "फ्री बॉडी डायग्राम" का लेक्चर पूरा हुआ ही था कि अचानक से बत्ती गुल हो गई| एकाएक मानवों की अलग प्रजाति ने विभिन्न किस्म की आवाज़ से सुशोभित "सी-413" की गेट पर दर्शन दिया और इनकी करतूतों ने ऐसा मन मोह लिया की "बीईएम की प्रिपरेशन" की नैया का मैंने बीच मझधार में ही साथ छोड़ दिया|

खैर सुबह 7.30 को बुझी हुई बत्ती वापस खिल उठी और तब तक मेरे "बीईएम" का सूर्य अस्त हो चुका था| 7:40 के करीब मेस की ब्रेड और साइकिल की घंटी में प्राथमिकता निर्धारित करने के लिए मानसिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हुई तथा पेट पूजा को अपनी सर्वश्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए तनिक भी देर न लगी | 7:41 तक मैं, ना दिख पाने वाली ब्रेड की दीदार के लिए मेस दरवाजे के बाहर तक लग चुकी लाइन में अपना स्थान स्थापित कर चुका था| खैर मेस में युद्ध विराम करके मैं साइकिल स्टैंड की तरफ लालचाई आंखें से अपनी साइकिल ढूँढने लगा| "हॉल" से "नालंदा" तक साइकिल की कतरे ऐसा प्रतीत कर रही थी मानो, भारत - पाकिस्तान युद्ध के लिए सैनिकों की टुकड़ी "बॉर्डर" पर तैनात करने के लिए तैयार की जा रही हो|
"नालंदा बटालियन" के कप्तान हमरे "ट्रैफिक" हवलदार दादा, जो 15 फीट चौड़ी रोड को छोडकर अंग्रेजों के दसक की बनी 5 फुट साइकिल ट्रैक पर चलने के लिए प्रेरित कर रहे थे| जर्जर हो चुकी सड़क पर हज़ारों सैनिकों की नियमित रूप से ट्रेनिंग उनको जीवन में आने वाली हर एक मुश्किल घड़ी के लिए तैयार कर रही थी|

खैर 8 बजे "बीईएम" टेस्ट और 2-5 "पी ओ डब्लू लैब" में दिन के कुछ महत्त्वपूर्ण पल बरबाद करने के बाद, एक भटके हुए मुसाफिर की तरह मैं 6 बजे हाल पहुँचा| सुबह बत्ती गुल होने की पीड़ा से अभी उभरने की कोशिश में ही था, की कान के परदे को स्पर्श करते हुए दिमाग में एक ध्वनि गूंज उठी "आने वाले 24 घंटे कैंपस में पानी नहीं रहेगा " | इसे पहले मै इस ध्वनि के स्रोत का पता लगता, मेरे पैर बाथरूम की तरफ प्रस्थान कर चुके थे | अब अगर मै इस घटाना की व्याख्या करने लगू तो संभवतः अगले आधे-एक घंटे में मुझे भी "डिसिप्लिनरी एक्शन" का इ-मेल आ जाए |

खैर इस भयावह दिन का अंत हुआ और मै अपने सुखे गले की प्यास "एमएस वली ओरियो शेक" से बुझाकर मैं अपनी ना हो पाने वाली क्रश के विचार में डूब गया |

"Peace है!"

चलो मानता हूँ कि समय के साथ मेरी हिन्दी और अंग्रेज़ी शब्दावली में काफी बड़े-छोटे बदलाव आए हैं, पर KGP आने के बाद मेरी भाषा इतनी बदल जाएगी, इसका अंदाज़ा न था। अब तो मैं छुट्टियों में घर भी जाता हूँ, तो शुरुवाती दिनों तक किसी भी रिक्शावाले, सफ़ाईवाले या मिठाईवाले "uncle" को भूल से "दादा" कहकर ही संबोधित कर देता हूँ। हालांकि ये सब तो मैं कई हद तक संभाल भी लेता हूँ, पर उनसभी शब्दों और उपवाक्यों का क्या, जो "KGP lingo" से मेरे शब्दावली में धीरे धीरे करके प्रवेश हो गए हैं? जब-जब मैं किसी गैर-KGPian से बात करता हूँ, तब-तब ऐसा लगता है मानो मैं चाहकर भी "KGP lingo" को अपनी भाषा से अभिन्न नहीं कर पाऊँगा। कुछ-कुछ यदि कर भी लूँ, पर ये "peace है" तो मेरे "KGPian मुख" से आगामी कुछ वर्षों तक निकालना बंद नहीं होगा, इतना तो में निश्चयपूर्वक कह सकता हू।

चूंकि हम KGP से पूर्व इस प्रकार के lingo के आदि न थे, और न ही वाक़िफ़ थे, हममें से कईयों को "peace है" सुनने में कुछ अटपटा-सा लगता था। मेरे ही कुछ मित्र इसका मज़ाक तक उड़ाते थे, और "peace मार" जैसे उपवाक्यों को सुनके तो और हंसी फूँटती थी। "peace" शब्द का बहुरूपी उपयोग हमें अचंभित भी करती थी, कि कैसे इतने रचनात्मक ढंग से यह शब्द अलग-अलग अर्थों को बतलाने में इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे कि- "peace हो जाना", "peace कर देना", "peace मारना", "peace मरवाना", इत्यादि-इत्यादि।
सिर्फ यही नहीं! हमको आगे मालूम चलता है कि उसी lingo को यदि अलग अलग अवस्था में उपयोग किया जाए, तो वो अर्थ से और भाव से अलग-अलग रूप में प्रकट होता है। आगामी उदाहरणों की श्रृंखला, (जो मेरे ही एक मित्र की KGP यात्रा से प्रेरित है। पिंटु नाम है उसका।), शायद इस अटपटी बात को अर्थ दे देगी।
अपने "फच्चाकाल" में मान लीजिए, पिंटु को यदि अपने acads के संबंध में चिंता-व्यथा सताए, तो senior फरमाए: "अरे, तुम बस classes जाओ, फिर acads तुम्हारा peace है।" पिंटु ने अब कुछ societies join कर लिया है, और society meeting के दौरान एक senior निरुत्साही पड़े juniors में "tempo जगाने" के लिए पूछता है, "peace है?" (उसके जवाब में जबतक सभी juniors एक बार ज़ोर से "हाँ!" नहीं चिल्लाएँगे, तबतक seniors के कानों को तृप्ति का भोग न होगा।)
पिंटु में अब society को लेकर काफ़ी tempo जग गया है, और society के दिये tasks वो पूर्ण-समर्पण भाव से सम्पन्न करता है, तो senior उसको अपने "स्वर्ण-शब्दों" से सम्मानित करता है, जो हैं: "peace है।" अब पिंटु भी "peace है" का इस्तेमाल करना सीख गया है, और वो आपस ही में अपने batchies से हँसते-हँसते कहता है: "अरे peace है यार, mechanics की क्लास में वेसे भी हमको घंटा कुछ समझ नहीं आता।"

पिंटु अब 2nd year में आ गया है। वो अपने किसी "load" लेते मित्र का "load" कम करने की चेष्टा में कहता है: "अरे peace मार ना भाई! क्यूँ "load" लेता है? मैं हूँ ना।" पर पिंटु को लग रहा है कि वो life में मचा रहा है। कारण स्पष्ट है: पिंटु की भी "बंदी" बन गयी है! लेकिन फिर, ज़िंदगी उसको बंदी के आते ही loads मुफ़्त में दे रही है, या यूँ कहें कि उसकी बंदी ही उसको काफी load दे रही है। बड़े अहोभाग्य उसके कि इस बीच उसे एक तेजस्वी senior के दर्शन हो जाते हैं, जिसके श्री-मुख से निकलता है: "वो बंदी ही नहीं जो load दे। peace मार दे अब उसको!" और उसके सभी ज्ञान-चक्षु खुल जाते हैं।
न जाने कितने रूप इस lingo के आगामी वर्षों में और प्रकट होंगे! पर कुछ भी कहें, यह तो मानना पड़ेगा कि "peace है" मात्र एक lingo ही नहीं, बल्कि एक मंत्र भी है, जिसके उच्चारण मात्र या सुनने मात्र से ही, किसी भी KGPian का "load" हल्का हो जाता है।

भाट

कार्टून कोना

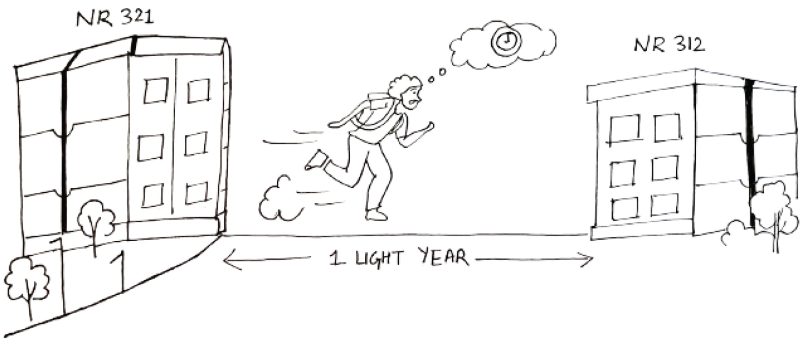

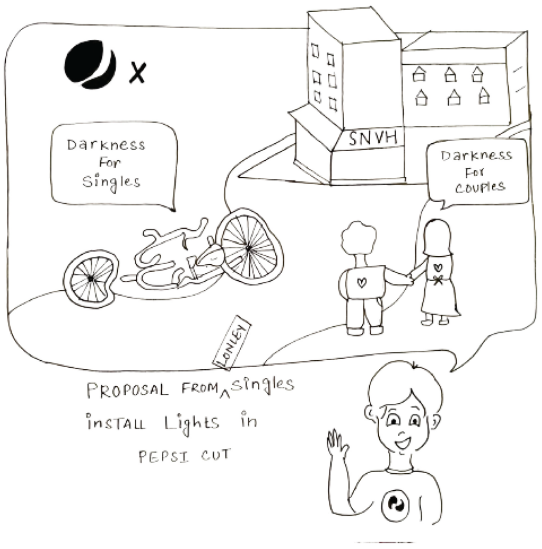

संपादकीय

प्रिय पाठकों,
नमस्कार!

कई वर्षों की प्रतीक्षा के बाद आवाज़ परिवार आपके सामने इस वर्ष का वार्षिक अंक प्रस्तुत करता है। नया साल है नया सेमेस्टर है, पर समस्याएं वहीं पुरानी - प्लेसमेंट, CG और बंदी!

वसंत ऋतु सर्वप्रिय होती है और कैंपस में भी उल्लास नज़र आ रहा है। सेमेस्टर का आगमन Alumni Meet से हुआ जिसके बाद Kshitij और Spring Fest ने जनता का टेंपो हाई रखा। आवाज़ ने 2 वर्षों के बाद पंच परमेश्वर का सफल आयोजन किया। इसमें समुच्चय कैंपस के छात्र - छात्राओं की सह- भागिता अपरिहार्य रही। फिर वैलेंटाइन्स वीक आया पर एक average KGPian का इससे भला क्या लेना देना। रंगो के मोहोत्सव होली में हर्ष और उल्लास का माहौल रहा और t-shirt फाड़ने की परंपरा को आगे बढ़ाया गया।
GC और चुनाव दरवाज़े पर है, इसलिए हॉल टेंपो हाई दिख रहा है और सोसाइटीज की मीट्स peace मारी जा रही है। किंतु 6 हॉल्स के निलंबन होने के बाद, इसका रंग फीका ज़रूर पड़ गया है।

अगर गुज़रे साल का आत्मनिरीक्षण किया जाए, तो यह साल काफी उतार चढ़ाव से भरा रहा। इन्टर आईआईटी में हमारा प्रदर्शन सराहनीय रहा, प्लेसमेंट्स सामान्य ही रहे एवं ILLU का पुनः प्रारंभ हुआ। प्रथम वैश्विक IIT, Malaysia में स्थापित होने जा रहा है। इस IIT की बुनियाद IIT खड़गपुर द्वारा रखी गई थी और ये KGP का ही एक कैंपस होगा। उम्मीद की जा रही है की इसकी कार्यवाही सितंबर 2023 में शुरू हो जाएगी। ये हम सब के लिए गर्व की बात है। पर इन सबके ऊपर, एक आम छात्र मानसिक रुप से कितना खुश है इस पर अभी भी प्रश्न चिह्न है। सभी IITs में ही ये एक चिन्ता का विषय है और हम उम्मीद करते है की प्रशासन परिस्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए उचित कदम उठाएगा।

पिछले ऑफलाइन सेम ने जनता की CG और CDC इंटर्नशिप की उम्मीद दोनों गिरा दी हैं। अब Maggu पर तो ये लागू नहीं होता पर जो नेहली से छग्गी बने है वे तनाव में हैं।

देश विदेश की बात की जाए तो रशिया-यूक्रेन युद्ध की वर्षगांठ हो चुकी है। किसी की जीत भले ही ना हुई हो, मानवता की हार जरूर हुई है। हाल ही में तुर्की भूकंप के झटकों से सहम गया और हजारों लोगों ने अपने प्राण गवाएं। अमेरिका और चीन के बीच में घर्षण जारी है और चीन- रशिया की बढ़ती करीबी वैश्विक अमन के लिए एक चिंता का विषय है। ईरान में महिलाओं ने एक मिसाल कायम करते हुए कुरूप कानूनों का भीषण विरोध किया और एक सत्तावादी सरकार को हिला कर रख दिया। Argentina को FIFA World Cup जीता कर मेस्सी ने इतिहास में अपना नाम शाश्वत कर लिया है।

देश की बात की जाए तो बेरोज़गार , एवं layoffed युवा बराबर ही नज़र आ रहे हैं। जब पूरे विश्व में असहिष्णुता एवं ध्रुवीकरण बढ़ता नज़र आ रहा है, निष्पक्षिय पत्रकारिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की जरूरत अभी से ज़्यादा कभी नहीं है। भारतीय महिला क्रिकेट टीम भी उनके पुरुष संगी की तरह हमे ना निराश करते हुए, सेमीफाइनल से ही बाहर हो गई। टेस्ट में हमारे 10 प्रभावी खिलाड़ी अच्छे नज़र आ रहे हैं और KL Rahul फॉर्म में आने के लिए IPL का इंतजार कर रहे हैं। महिलाओं और पुरुष खिलाड़ियों के लिए सामान्य वेतन और WPL की शुरुआत लैंगिक समानता की ओर एक अच्छा कदम है। हमारी प्रिय आरसीबी यहां भी मखा रहीं हैं। हॉकी में हमारा प्रदर्शन निराशाजनक ही रहा। वहीं सारे राजनैतिक विशेषज्ञों ने आने वाले G-20 सम्मिट पर अपनी नजरें जमा ली हैं जिसकी मेज़बानी भारत ही कर रहा है।

वैलेंटाइन्स डे और मिडसेम, ये दो परीक्षाएं तो अब औसत ही गई पर हमें आशा हैं की एंडसेम में हमारे सारे पाठक हमेशा की तरह मचाएंगे। KGP Election चौखट पर है और बहुत जल्द ही प्रचार औपचारिक रूप से शुरू हो जाएगा। आवाज़ अपने धर्म का पालन करते हुए आने वाले चुनाव का निष्पक्षीय आवरण करेगा| यह हमारा सौभाग्य होगा की हम इस बड़े समुदाय में कुछ फलदायक योगदान कर पाएं। आवाज़ परिवार की तरफ से आप सबको मंगल कामनाएं।

जय हिंद।

KGP GATE

बिखरा हुआ शीराज़ा था मैं। क्या ज़िंदगी थी मेरी, 50 साल पुरानी आईआईटी जिसमें रोज़ नए आविष्कार चल रहे थे पर मैं तो ज़मानों से वैसा ही अधूरा था। हज़ारों विद्यार्थी करोड़ो की नौकरी लेकर चले गये पर मेरे बारे में किसी ने सोचा भी नहीं ना ही पीछे मुड़कर देखा की कैसी हालत में हूँ मैं, थोड़ा पैसा मुझपे लगा जाते तो आने वाले छात्रों को लगता ना की वह आईआईटी में आ रहे है। पर इस व्यवस्था से मैं तब उठा जब मेरा नवीकरण शुरू हुआ।

2019 की बात हैं, जब यह तय हुआ की मुझे फिरसे और बेहतरीन तरीक़े से बनाया जाएगा। मेरी तो ख़ुशी का ठिकाना ही नहीं रहा। मेरा नवीकरण शुरू हुआ, पर हाय रे मेरी फूटी क़िस्मत यह कमबख़्त चाइनीज़ वायरस आ गया। सब के सब वापस लौट गये, मुझ पर काम रुक गया, मैं उदास हो गया। मैं इंतज़ार करता रहा कि कब ये बीमारी ख़त्म हो और कब सब लौट आये , इंतज़ार तो मानो ख़त्म होने में आ ही नहीं रहा था, पूरा साल बीत गया था और कोई स्टूडेंट उस गेट से अंदर आया ही नहीं, मुझे उनकी याद आने लगी, उनके मुस्कुराते हुए चहेरें, उनकी साइकिल की आवाज़, ... वाह क्या दिन थे। कुछ समय बाद सब सही होने लगा, बच्चे वापस आने लगे और मुझपे रुका हुआ काम फिर शुरू हुआ। मैं सब फिर से शुरू होता देख बहुत खुश हुआ।

मेरा नवीकरण 2022 अगस्त में ख़त्म हुआ और मुझे विश्वास नहीं हो रहा था की मैं कितना बढ़िया दिख रहा हूँ , कई छात्र मेरे साथ फोटो खिंचवाने लगे और उनकी स्माइल देखकर मैं भी चहक उठा। 2022 का बैच आया और तब तो हर कोई मेरे साथ तस्वीर लेना चाहता था, सिर्फ़ बच्चे ही नहीं, उनके माँ बाप भी मेरे साथ फोटो खिंचवाते। अब ऐसा लगता है कि मैं आईआईटी खड़गपुर का गेट हूँ, की मेरा जीवन यहाँ के जीवन के मात्र मूकदर्शक से अधिक है, मैं भी इसका एक हिस्सा हूँ।

वैसे तो निश्चित रूप से अधिकांश छात्र मेरी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं जब भी वे घर वापस जाने के लिए स्टेशन या छेदिस की ओर साइकिल चलाकर जा रहे होते हैं, फिर भी कभी-कभी एक अकेला साइकिल चालक, एक रोमांटिक कपल या दोस्तों का एक समूह मेरे सामने चुपचाप खड़ा होता हूं, शायद मेरी भव्यता को देखते हुए। शायद विडंबना यह है की मैं कैंपस के बाहर की जर्जर सड़कों और घरों से बहुत अलग हूं और कैंपस के अंदर की महिमा का प्रतीक हूँ।

मुझे अपने नवीनतम अवतार में यह एहसास हुआ है कि मैं उस फच्चे के चेहरे पर विस्मय का प्रतीक हूं जब वह पहली बार अपने नए घर में मेरे प्रवेश द्वार से गुजरता है- मैं अपनापन और आशा का प्रतीक हूं, कि मेरी तरफ का जीवन इसके बाहर की तुलना में बेहतर होगा। मैं यहां का हीरो नहीं बनना चाहता- छात्र, प्रोफेसर और अन्य कार्यरत कर्मचारी इसका श्रेय ले सकते हैं। मैं सिर्फ एक सतर्क रक्षक हूँ , एक मूक अभिभावक जो दर्शाता हूं वह सब कुछ जिसके लिए केजीपी खड़ा है और इसकी हर खुशी में हँसता हूँ, और हर दुख में रोता हूँ।

फण्डा कॉर्नर

जिमखाना की शुरुआत पटेल छात्रावास के रुम न. A-201 से हुई थी, जो क्रमशः स्थानतरित होते हुए पहले IOSYS और फिरअपने वर्तमान स्थान तक पहुँचा। और इसे पहले 'सर ज्ञान चन्द्र घोष मेमोरियल स्टुडेन्ट सेन्टर' के नाम से जाना जाता था !!

INTER IIT

Inter-IIT.... The prestigious event of the year when a bunch of IITians (and third-generation IIT students) realise there's more to life than Among Us, Discord groups and ceaseless Adda sessions- "College pride".... same college though it is as the one they cursed over chai and sutta last week at Adda(or was it last month?)

The 3 Inter-IIT Meets- Tech, Cultural and Sports provide a perfect opportunity for students with great enthusiasm to compete amongst themselves to make it to the final contingent. The chosen one(s) grind it out day in, day out, all aimed at a single goal- (getting a CV spike) bringing the Cup home or ensuring it stays there. And this year, so we did- We retained the Cultural and Tech Cups while winning a Silver in the Sports Meet(missed out on Gold by a whisker).

At the Sports Meet, E. Madhuri and Vikas Kumar spearheaded our charge at IIT Delhi while Mendi Jeevan and Nancy Agrawal led our contingent at IIT Roorkee. The highlights were our performance in the Aquatics Meet, where we decided to take all the records, medals and accolades home. That's not the end though, as we won the Athletics cup with days to spare which just goes on to show the pros of waking up at 7:55 am for an 8 am class and cycling like you are at the Tour de France. We could obviously go on and on about each event, but we have 2 more Meets to talk and praise ourselves vainly about.

The Cultural Meet, led by Contingent Leader Karan Singh and Deputy Captain Siddhi Bhor was, without a doubt, a reflection of what we do throughout the year anyways- Dance, drama, music, poetry, and whatnot. 6 out of 9 cups with respectable performances in each of them meant that our path to the Cup victory was way less complicated than the rules in some competitions of the event.

The Tech Meet, captained by Ashish Gokarnkar with Jaskaran Singh Sodhi and Sankalp Bose as the Vice-Captains, was held in hybrid mode (not every IIT has 2100 acres of barren land), was marked by vague problem statements and impractical deadlines, yet our contingent pulled through and performed admirably in each of them, winning a podium in all but 2 events.....

Sounds crazy right? Not crazier than the First Low-Prep Problem Statement.

In conclusion, let's just say a designer at the Tech Meet was creative enough to put up a banner saying," All IITs walk into a cafe. Everyone goes, 'Where is my cup?' ". Guess they should have just said instead, and this applies for all the meets, "All IITs walk into a cafe. Everyone goes,' Why the hell did Kgp take all our cups!'. "

IIT KGP Overall Standings

Technology

Social & Cultural

Sports & Games

पंच परमेश्वर

खड़गपुर के किसी इलाके में बसी थी एक गांव ,
जहाँ जीवन कभी थी हसीन , था हज़ार समस्याओं का छाँव।

जीवन का हल देने बैठे थे कुछ पंच बरगद के नीचे,
कोई शारदा यूनिवर्सिटी फेल, तो किसी की लौकी के बागीचे।

गब्बर और बसंती की धुमधाम से हो रही थी सगाई,
केले के प्यार में अंधा वीरू , बसंती की मांग भर आए।
बसंती होगी किसीकी ? मच गया था बवंडर,
और होती भी क्यों न वीरू था तो एक बंदर।

दादियों के रिप्ड जींस ने था हल्ला मचाया
बहुऐ हैं परेशान ये शिकायत पंच तक आया।
सही है कौन बहुएं या दादियां ?

देखने उनके मामले को जनता ने भीर लगाई
कुछ ने कहा दादी बनी मॉडर्न,
और किसी के लिए ये थी बढ़ती उमर में बेवफाई।
क्या करेंगे पंच, कैसे देंगे इन्हे सुनवाई ?

चलती रही नोक-झोक और लोगो की शिकायतें,
जो जीता वो सिकंदर, ले गए लौकी हंसते मुस्कराते।

गज़ब की इस जगह में ऐसी खुराफते मिलती है कहाँ !
रोक -टोक, नोक-झोंक के बवजूद यह थी एक अलग जहाँ।

ये ऐसा वैसा गांव नहीं यहाँ के मुद्दों का ना था कोई आर-पार,
हर मुद्दे का समझौता और भाईचारा ही निकला सार
क्योंकि था तो यह विधायक जी का आवाज़ परिवार /
और होती भी क्यों न, इसका संचालक जो था खुद आवाज़ परिवार।।

आवाज़ परिवार

मुख्य संपादक: निश्चय गोठवाल, शुभेष आनंद, शिवम श्रीवास्तव, अक्षिता जाजू, शिरीन गोयल, हिमाद्री साहा, स्मयन दास, शोभित साहेब डे, हेमंत गहनोलिया

संपादक: जय प्रकाश कुमार, मिहिर कुमार चौधरी, सुमदुरा उप्पाराहल, अभिषेक महालुंगे, यश्वी जैन, वैभव सिंह, विवेक सुरेका, मयंक कुमार, आशीष हर्षवर्धन, संभव कुमार, तुषार खोस्वर, आकाश चौरसिया

सह संपादक: ऋषभ राज, समर्थ सिंह, सुमित सिंह, दीपजौय रूद्र शर्मा, तनमय दत्ता, रितिक मिश्रा

वरिष्ट पत्रकार: अंकुश, अग्रिम, आशुतोष, वंशुल, ईश, ईशान, तनिश, श्रेया, सुशांत, परिधि, आस्था, अमिषा, मनस्वी, आशुतोष, प्रज्वल, दिग्विजय, हिमांशु, प्रतीक, हिमांशी, अंजली, हर्ष, देववर्धन, अनुराग, जश, स्पंदन

कनिष्ठ पत्रकार: अभय, अभिषेक, अहवाबन, अमीष, अर्नव, असीम, आयुष, लिखिता, चन्द्रबल, दीया, गौरव, हर्षित, जाह्नवी, कनिष्क, कशिश, कुसुमिता, मुस्कान, पीयूष, प्रभात, प्रत्युष, स्पृहा, सुचिस्मिता, तेजस, उर्वी, वाणी, यश

और जानने के लिये scan करे

आपके सुझाव आमन्त्रित है कृप्या अपने सुझाव हमें editor@awaaziitkgp.org पर भेजे

HUMANS OF KGP

आईआईटी खड़गपुर का कैंपस अगर वाकई में 'एक शहर-जैसा' प्रतीत होता है, तो तमाम तरह के दुकानों के बीच बिन मिठाई के दुकान के, प्रसिद्ध 'मिष्टी-प्रेमी' बंगाली उपनाम कुछ अजीब मालुम पड़ता।

इसी सन्दर्भ में कैंपस निवासियों के जिह्वा को वर्षों से मिठास प्रदान करने वाली एवं उनको 'मिष्टी-सुख' का एहसास कराने वाली एक दुकान है- टेक-एम के भीतरी भाग में स्थित - 'बिमला स्वीट्स', जो पूरे टेक मार्केट की सबसे पुरानी दुकान भी है। इस दुकान के मालिक, श्री बिमल कुमार घोष, जिनको लोग प्यार से "बाबलू दा" भी बुलाते हैं, हमें बताते हैं की दुकान की शुरुआत सन् 1978 में उनके पिताजी ने की थी। तब वह दुकान अस्थायी रूप से टेक-एम के मध्य भाग में था। कुछ समय बाद ही उसका स्थान बदल कर भीतरी भाग में कर दिया गया।

अत्यंत नम्र और खुशदिल व्यव्हार के हमारे 74 वर्षीय बाबलू दा का जन्मस्थल खड़गपुर ही है। अपनी स्कूली शिक्षा भी उन्होंने यहीं से प्राप्त की और शिक्षा के दौरान ही उन्होंने पिताजी का हाथ बटाना शुरू कर दिया। तबसे लेकर आजतक दादा दुकान में पूर्ण समर्पण-भाव से कार्यरत हैं। विवाह के बाद उनकी पत्नी भी उनके संग दुकान का कारोबार देखती हैं। दुकान के संदर्भ में ऐसे कुछ दिलचस्प तथ्य हैं जो दादा ने हमारे साथ सांझा करते हैं। दुकान का नामकरण "बिमला स्वीट्स" ही क्यूँ हुआ, इसके बारे में दादा बताते हैं कि एक बार वो सपरिवार जगन्नाथ धाम को गए थे। वहाँ पर स्थित एक प्रख्यात शक्तिपीठ (जो "बिमला देवी" नामक एक हिन्दू देवी पर समर्पित है), से प्रेरणा लेकर और देवी के प्रति अपार श्रद्धा के फलस्वरूप दुकान का नाम "बिमला स्वीट्स" रखा गया। दादा फिर मुस्कुराते हुए बताते हैं कि संयोग से उनका नाम ही बिमल है, जो दुकान के इस नामकरण को और अधिक प्रभावी बनाता है।

कैम्पस निवासियों के बीच दादा की दुकान सदा से लोकप्रिय रही है। रोशोगुल्ला हो या सॉंदेश के अनेक प्रकार, सामान्य मिठाइयों से लेकर स्थानीय मिठाइयाँ, सब इस दुकान में उपलब्ध रहती है, जो इसकी लोकप्रियता का एक मुख्य कारण है। पर दादा बताते हैं कि इन सभी मिठाइयों में

से एक मिठाई है, जो सबको इधर काफी पसंद है- रोशोमलाई।
उनके दुकान की लोकप्रियता और उसके प्रति लोगों का जुड़ाव, इस बात से अंकित हो सकता है कि कैम्पस के विद्यार्थी ग्रेजुएट होने के बाद भी इस दुकान में मिठाइयाँ खरीदने आते हैं। संस्थान के प्रोफेसरगण और उनके गृहजन भी मिठाइयों के बहाने अक्सर दुकान का दौरा मार ही लेते हैं। ये तथ्य इसी बात की सांकेतिक हैं, कि इन सभी वर्षों में दादा, उनकी पत्नी और उनके कर्मचारियों का अपने कई ग्राहकों के साथ आत्मीय संबंध भी स्थापित हुए हैं, जो दादा बताते हैं कि बिल्कुल प्राकृतिक रूप से ही हुए हैं। पर इस दुकान ने हाल में घटित कोविड महामारी और लौकडाउन जैसी स्थितियों के बाद इन संबंधों में और ग्राहकों की मात्रा में कई परिवर्तन देखे हैं। दादा बताते हैं कि लौकडाउन के दौरान उनके व्यापार में भारी गिरावट आई थी, जिसके कारण कर्मचारियों को कम वेतन से ही गुज़ारा चलाना पड़ रहा था। इस कठिन समय में इंस्टीट्यूट के एडमिनिस्ट्रेशन से उनको काफी मदद मिली, जैसे- उनके लिए राशन की व्यवस्था एड्मिन ही कर देती थी।

दादा बताते हैं कि पहले के समय में दुकान में "students" नहीं "student gangs" आती थीं। एक बार तो ऐसा हुआ था कि लगभग 150 जितने विद्यार्थी एक साथ आके दुकान के बाहर बैठ गए, रसगुल्ले और जलेबी खाने! (शायद वे सब एक ही हॉल के थे।) आज का समय पहले जैसा न रहा क्योंकि उनके अनुसार आज के विद्यार्थियों पर "academic load" अधिक हो गया है,और इस "डिजिटल एज" में विद्यार्थियों का अधिकांश समय स्क्रीन पर ही चला जाता है, जिसके कारण वे अपने आसपास वालों से कम मिलनसार हो गए हैं। विद्यार्थियों के दिनचर्या में यही बदलाव आज पूरे "KGP कल्चर" को बेहद मुख्य रूप से प्रभावित कर रहा है।

बाबलू दा इस साक्षात्कार के दौरान अपनी जवानी के दिनों के कई किस्से प्रसन्नता के साथ बताते है। चाहे उनका वामपंथी आंदोलन एवं सभाओ में नियमित रूप से पहुंचना हो या भारत पाकिस्तान युद्ध के अनसुने KGP के किस्से, उनका उत्साह हमें निरंतर विस्मित करता रहा। वह IIT खड़गपुर से एक अनोखे सम्बन्ध होने की बात करते हैं, और हमें मिष्ठान एवं जलपान के साथ विदा देते हैं।

JEWELS OF KGP

आईआईटी खड़गपुर में आर्किटेक्चर और रीजनल प्लानिंग विभाग के चौथे वर्ष के छात्र देवराज श्रीराम, मास्टरटैग के संस्थापक और सीईओ हैं | मास्टरटैग रोजमर्रा की जरूरी चीजों को ट्रैक करने के लिए बनाया गया है। देवराज की संस्थापक बनने की यात्रा कॉलेज के दूसरे वर्ष में शुरू हुई | हमारे जीवन को बेहतर बनाने वाले प्रोडक्ट की मदद से समस्याओं को हल करने के विचार ने उन्हें हमेशा उत्साहित किया। उसी से एक कंपनी शुरू करने के तरीके सीखने की उम्मीद के साथ, उन्होंने एक स्टार्टअप में इंटर्नशिप करके अपनी यात्रा शुरू करने का फैसला किया, लेकिन एक इंटर्न के रूप में कंपनी चलाने के बारे में सीखना उनके लिए संभव नहीं था और तभी उन्होंने फैसला किया की उनका अपना स्टार्टअप होगा। उन्होंने डिजाइन शीट्स पर काम करते हुए समस्याओं को हल करना शुरू किया, और 'डिज़ाइन शीट' नाम का स्टार्टअप शुरू किया | डिजाइन शीट डिजाइनरों के लिए एक चैटजीपीटी की तरह था।

उसके बाद उनका अगला स्टार्टअप, अद्वीती.कॉम (Adwiti.com) को उन्होंने 2021 की शुरुआत में लॉन्च हुआ | अद्वीती के 14,000 से ज्यादा यूजर्स थे, लेकिन देवराज और लोगों की मदद करना चाहते थे। इसी विचार को हमेशा अपने मन में रखते हुए उन्होंने एक दिशा में काम करना शुरू कर दिया जो हर किसी की मदद कर सके और तभी उन्हें मास्टरटैग का विचार आया।
शुरुआत में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे कि सोचे गए स्टार्टअप से व्यवसाय कैसे बनाया जाए। उनके अनुसार शुरुआत में 2 चीजें सबसे महत्वपूर्ण होती हैं, एक विचार और फिर उसे वास्तविकता में कैसे लाया जाए। शुरुआत में उनके लिए यह कठिन था और उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता थी | जैसे-जैसे उनका नेटवर्क बढ़ता गया, वो पूर्व छात्रों और स्टार्टअप क्षेत्र में काम करने वाले अन्य लोगों से जुड़ते गए और उन्हें वह सारी महत्वपूर्ण मदद मिलती रही। उन्होंने यह भी बताया की ऑनलाइन मोड ने उन्हें अपने स्टार्टअप के बारे में विचार करने के लिए बहोत समय दिया |

वह अपने सीवी पर काम करने के बजाय अपने स्टार्टअप पर काम करने में समय लगाने से नहीं डरते थे क्योंकि उनका मानना है कि अपने स्टार्टअप पर काम करना उनके सीवी पर काम कर रहा है, क्योंकि भले ही स्टार्टअप एक या दो साल बाद विफल हो जाए, परन्तु जो अनुभव उस स्टार्टअप के लिए काम करने से मिलेगा वो बहोत महत्वपूर्ण रहेगा और कंपनी का निर्माण करते समय कॉर्पोरेट जगत और कंपनी में कार्य प्रवाह को समझने में मदद ही मिलेगी। एक एंट्रेप्रेनुएर की यात्रा जोखिमों से भरी होती है। असफलता की संभावना बहुत अधिक होती है, कभी-कभी इससे भारी नुकसान होता है। इसी पर जब देवराज से उनकी राय पूछी गई तो उन्होंने बताया कि स्टार्टअप बनाने में कोई नुकसान नहीं है, मन में कोई डर नहीं होना चाहिए, क्योंकि अंत में स्टार्टअप बनाने से मदद ही मिलती है। अगर किसी ने वास्तव में अपने स्टार्टअप में अपने पुरे मन और जान से मेहनत लगाई हो, तो उन्हें अपने द्वारा लिए जा रहे जोखिम के बारे में नहीं सोचना चाहिए, उन्हें यात्रा पर ध्यान देना चाहिए। यह ध्यान में रखते हुए कि हमारा उत्पाद लाखों लोगों के लिए कैसे उपयोगी हो सकता है और कैसे यह उनके जीवन को आसान बना देगा, यही विचार हमे एक अलग प्रेरणा देना चाहिए | उन्होंने सुझाव दिया कि जिस परियोजना पर हम काम कर रहे हैं, उससे हमें कुछ भी उम्मीद नहीं करनी चाहिए, इरादा एक कौशल सीखने की ओर होना चाहिए।

आईआईटी केजीपी की संस्कृति को वो अपनी सफलता का एक बड़ा हिस्सा मानते है। उन्होंने कहा कि आईआईटी केजीपी में पहले से चौथे वर्ष तक की उनकी यात्रा अविश्वसनीय रही है और उनका मानना है कि केजीपी जीवन एक व्यक्ति को वास्तव में दुनिया का सामना करने के लिए तैयार करता है। उन्होंने कहा कि उनके विभाग, आर्किटेक्चर के छात्र मुख्य रूप से अपने पाठ्यक्रम के कारण प्रबंधकीय पदों के लिए पात्र थे। वह क्षितिज और आईआईटी टेक एम्बिट का भी हिस्सा थे | लोगो से बाते करना और नेटवर्क बनाने का कौशल सिखने में इन सोसाइटी का बड़ा हाथ था।
वर्तमान में मास्टरटैग ने 1000 इकाइयों का निर्माण करने के बाद ऑर्डर से डिलीवरी तक 368 इकाइयां बेची हैं। पूरे स्टार्टअप को देवराज और उनके पिता द्वारा लगभग 12 लाख के निवेश के साथ बूटस्ट्रैप किया गया है, जो उनके उत्पाद के पहले उपयोगकर्ता थे। मास्टरटैग के साथ उनका अंतिम लक्ष्य हमारे आस-पास की हर निर्जीव वस्तु को आवाज देना है ताकि हमें उन्हें खोजने में समय बर्बाद न करना पड़े |

KNOW YOUR PROFESSOR

आइये मिलते है एडवांस्ड टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट सेंटर में सहायक प्रोफेसर डॉ. कौशल कुमार से, जो प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऑग्मेंटेड एंड वर्चुअल रियलिटी की क्षमता पर दूरदर्शी ध्यान के साथ शिक्षा में क्रांति लाने के लिए पूरी लगन से समर्पित हैं। उनकी शैक्षणिक यात्रा भारत के भुवनेश्वर में उत्कल विश्वविद्यालय से गणित में स्नातक की डिग्री के साथ शुरू हुई, जहां उन्होंने अपने चार साल बिताए। अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने 2012 से 2013 तक गणित में मास्टर डिग्री हासिल की, और एक स्कूल में अपना शिक्षण करियर शुरू किया। अपने ज्ञान और कौशल को आगे बढ़ाने के लिए ठोस संकल्पित, उन्होंने नेशनल ताइवान नॉर्मल यूनिवर्सिटी से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की, जहां उन्होंने अपने नवीन विचारों और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के साथ खुद को प्रतिष्ठित किया। आज, वह अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करके हमारे सीखने और सिखाने के तरीके को बदलने की राह पर है।

वह पारंपरिक चीजों को चुनने के बजाय कुछ अलग करना चाहते थे। उन्होंने सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के बारे में सोचा जो सीखने में 3 ई (3 Es) प्राप्त कर सकता है जो आकर्षक(Engaging), आनंददायक(Enjoyable) और प्रभावी(Effective) है। उन्होंने बीजिंग में एक साल की पीएचडी पूरी करने के बाद स्मार्ट लर्निंग इंस्टीट्यूट में प्रवेश किया, जो दुनिया के सबसे बड़े गेमिंग संस्थानों में से एक है, जहाँ उन्हे प्रामाणिक चीज़ें सीखने का अनुभव प्रदान हुआ। प्रोफेसर का दृढ़ विश्वास है कि युवा छात्रों को शोध में शामिल होना चाहिए या इस क्षेत्र में एक स्टार्ट-अप बनाना चाहिए। उनका मानना है कि यहाँ IIT में हर छात्र के पास एक स्टार्टअप होना चाहिए और कहते हैं कि "IITians should be job-creators and not job-seekers".

प्रोफेसर कौशल कुमार ने UNESCO और कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग जैसे संगठनों के लिए शिक्षक और सलाहकार, दोनों के रूप में काम किया है। उन्हें UNESCO द्वारा एक वैश्विक विशेषज्ञ के रूप में चुना गया

था जहाँ उन्होंने इस कार्यक्रम में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। उनसे इस क्षेत्र में की गईं महत्वपूर्ण परियोजनाओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया कि कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग के दौरान उन्होंने शिक्षकों के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार करने पर काम किया, जहां वे सीखते हैं कि वे अधिक परस्पर संवादात्मक (Interactive) अनुभव के लिए अपनी कक्षाओं में VR का प्रयोग कैसे कर सकते हैं। उन्होंने 360 VR एजुकेटर्स पर भी काम किया है, जो बिना कोडिंग कौशल वाले शिक्षकों को बैकग्राउंड नैरेशन और चेकपॉइंट जैसी अतिरिक्त सुविधाओं के साथ VR में पाठ्यक्रम विकसित करने में सक्षम बनाता है। यह वर्तमान में 56 देशों में उपयोग किया जा रहा है। उन्होंने "कोड AR" नामक एक गेम भी विकसित किया है जिसने सर्वश्रेष्ठ इनोवेशन पुरस्कार जीता।

एक संदेश जो प्रोफेसर छात्र समुदाय को देना चाहते हैं वह यह है कि छात्रों को वह नहीं करना चाहिए जो हर कोई कर रहा है, बल्कि उन्हें कुछ अलग करने की कोशिश करनी चाहिए। भारत में काफी संभावनाएं हैं। अपनी बातचीत में उन्होंने एक उदाहरण दिया, "सूर्य पूर्व में उगता है, लेकिन हम पश्चिम का अनुसरण कर रहे हैं।" वह आश्वस्त है कि यह बदलने वाला है। शीघ्र ही, सूर्य पूर्व से उदय होगा और सभी पूर्व दिशा का अनुसरण करेंगे। सभी छात्रो को मिलकर उन विशिष्ट समस्याओं का पता लगाना चाहिए जिनका भारत वर्तमान में सामना कर रहा है। उन्होंने कहा की वित्तीय संसाधनों की कोई कमी नहीं है, लेकिन आपको बस एक अच्छे विचार की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा की कॉलेज जीवन के चार साल बेहद यादगार होते हैं, इसलिए हर चीज का आनंद लेना चाहिए। घबराएँ नहीं, क्योंकि कई बार आपको वह हासिल नहीं होगा जो आपने सोचा था कि आपके पास होना चाहिए। अंत में, अपने ज्ञान और कौशल का सदुपयोग करके अपने माता-पिता, संस्थान और देश के लिए कुछ करें। वे सोचते हैं कि आजकल छात्र बहुत अधिक दबाव के बारे में शिकायत कर रहे हैं, लेकिन कॉर्पोरेट जगत की तुलना में कॉलेज में वास्तव में बहुत दबाव नहीं होता है, कॉलेज आपको उस दुनिया के लिए तैयार करता है। हमें बहुत ज्यादा चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि चीजें हमेशा हमारे अनुसार नहीं होंगी।

OFFBEAT CAREER

आईआईटी खड़गपुर से हर वर्ष अधिकतम छात्र-छात्राए लाखों-करोड़ों के पैकेज लेकर और एक उच्चतम इंजीनियर बनकर निकलते हैं। लेकिन बहुत कम ऐसे होते हैं जो आम जनता की भीड़ का अनुसरण नहीं करते हैं और अपने करियर को अपनी दिलचस्पी के मुताबिक चुनते हैं। चाहे हम गौरव तनेजा की बात करें या फिर टीवीएफ वाले जीतू भैया की सभी ने अपनी सफलता के रास्ते स्वयं बनाए। उन्ही स्वावलंबी लोगो में साई स्वरूपा एय्यर का नाम भी बहुत मशहूर है।

साई स्वरूपा वर्तमान परिपेक्ष में एक उत्तम लेखक है तथा उनके पांच उपन्यास प्रकाशित भी हो चुके है। साई विनोद गुप्ता स्कूल ऑफ मैनेजमेंट आई आई टी खड़गपुर की पूर्व छात्रा है और चाणक्य यूनिवर्सिटी मे रचनात्मक लेखन की असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यगर्त भी है। उनके अधिकतम कार्य चाहे वो द्रौपदी- अ टेल ऑफ एंप्रेस हो या रुकमणि - कृष्णा वाइफ हो दोनो ही पात्र उन्मुखी है जिसके लिए उन्हें उपन्यास लिखने के पूर्व काफी अन्वेषण करना पड़ता है। उनके महाभारत का ज्ञान उनके लिए सबसे बड़ा संसाधन साबित हुआ है। इसके साथ-साथ अमरचित्रकथा जैसे विभिन्न संस्करणों को पढ़ने से उन्हें चहुं ओर दृश्य प्राप्त हुआ है। वह बचपन से ही अभिमन्यु के शौर्य की कहानी सुनकर बड़ी हुई थी परिणामवश उन्हें सबसे अच्छा अभिमन्यु का पात्र लगता था।

साई स्वरूपा ने बताया की आईआईटी खड़गपुर में प्राप्त की प्रबंधन की शिक्षा उपन्यास को प्रकाशित करने में बहुत कारगर साबित हुई। उपन्यास लिखने के दो भाग होते है। पहला भाग होता है जिसमें लेखक अपने अंतर्मन में उमड़ रहे उन्माद तरंगों के समान कहानी को अक्षरों में पिरोता है। दूसरा भाग होता है एक हस्तलिपि को उपन्यास के रूप में प्रकाशित करना। उसमें बहुत तरीके से प्रवेशन करना पड़ता है। साई स्वरूपा अध्यात्म से जुड़े उपन्यास के अलावा रहस्यात्मक उपन्यास भी लिखना चाहती है। इसके अलावा वह एक उपन्यास पुरुष के दृष्टिकोण से लिखना चाहती हैं। अभी तक के उनके सारे उपन्यास महिला की दृष्टिकोण से लिखे गए गई , उनका मन अब एक पुरुष की सोच पर आधारित उपन्यास लिखने का है।

उनका मानना है अगर उपन्यास को व्यावसायिक प्रयोग के लिए लिखा गया है तो उस उपन्यास की कितनी प्रतिलिपि बिकी ये ज्यादा मायने लगता है न की खराब रिव्यू। वह समीक्षा के लिए उपन्यास प्रकाशित करने से पहले ही अपने कुछ भरोसेमंद लोगो को भेज देती है जिससे उनको उपन्यास की क्षमता और कमजोरियों का पता चल जाता है।

जब साई स्वरूपा से पूछा गया की आप नकारात्मक समीक्षा का किस प्रकार सामना करती है तो उन्होंने इसका बड़ी चतुराई से जवाब दिया। समाज में बहुत ऐसे लोग होते है जो हमारे कार्य से प्रसन्न होते है परंतु उतनी ही मात्रा में आलोचक भी होते है। अगर नकारात्मक रिव्यू परिप्रेक्ष्य की भिन्नता के कारण आ रहा है तो हमे उसको नज़रंदाज़ कर देना चाहिए क्योंकि दुनिया में लोगो का चीज़ों को देखने का नज़रिया अलग हो सकता है। इसके उपरांत अगर नकारात्मकता बनी रहती है तो हमें बस उन रिव्यू को देखना चाहिए जिन्होंने उपन्यास को औसत बताया है। क्योंकि वही लोग उपयुक्त रिव्यू दे सकते है। हमे जनता की समीक्षा से अपनी कमजोरियों के बारे में पता चलता है।

साई स्वरूपा ने अपने आईआईटी में बिताए दिनों को याद करते हुए बताया की कैसे उन्होंने अपने शैक्षिक कार्य को करते हुए अपने लिखने के जुनून को जीवित रखा। वह रोज सुबह उठने के बाद आधा घंटा अपने मन के भाव को कागज़ पे पिरोया करती थी उसके उपरांत वह दिन के बाकी कामों में कार्यग्रात होती थी। उनका मानना है की प्रत्येक मनुष्य को जीवन का हर पहलू जीना चाहिए और अपनी चाह और मन की इच्छा को मरने नहीं देना चाहिए| जीवन में मानवता और बौद्धिक संभावना दोनों में संतुलन की बहुत ज़रूरत है।

इस प्रकार साई स्वरूपा ने आवाज़ के ज़रिए आईआईटी खड़गपुर के छात्रों को अपने पुराने दिनों के बारे में, अपने लेखक बनने के परिश्रम के बारे में तथा अध्यात्म की कुछ खो गई कहानियों के बारे में भी बताया। इसके अलावा उन्होंने भावी लेखकों को सीख भी दी और खड़गपुर के भावी लेखकों से जुड़ कर उनकी मदद करने का वादा भी किया।